पक्का हो इरादा, सफलता मिलेगी ज़रूर

कान्ता मारवा

अजमेर दरगाह के पास अंदरकोट के ठेठ अंदर एक कॉलोनी है—गरीब नवाज़ कॉलौनी। थोड़ी ऊंचाई पर है, पच्चीस-तीस घरों की यह बस्ती। कुछ पक्के मकान हैं, तो कुछ झोंपड़-पट्टियां भी। बाहर से कुछ लोग गरीब नवाज़ के नज़दीक आकर बस गए और कुछ अंदरकोट के बाशिंदों ने ऊपर पहाड़ी पर अपने मकान बना लिए हैं। वहां एक छोटे-से मकान में रहती हैं सत्रह वर्षीय जानू बेगम। इस साल (1992) दसवीं का इम्तहान देने की तैयारी कर रही है।

जानू को आज भी याद है जब वह छः वर्ष पहले असम से अपने अब्बू और दूसरी अम्मी को छोड़कर, अपनी अम्मी, बड़ी बहन और तीन भाइयों के साथ अजमेर आई थी। उसने सुना था कि अंदरकोट में नीलोफर और फरूख कोई पढ़ने-पढ़ाने के अनौपचारिक केंद्र चलाती हैं। उसमें वे लड़कियां पढ़ने जाती हैं, जिन्हें किन्हीं कारणों से स्कूल नहीं जाने दिया जाता। जानू कहती हैं कि वह कई बार उस केंद्र को चुपके-चुपके देख आई थीं और बराबर सोचती रहती थीं कि वह अम्मी को समझा-बुझा कर दो घंटे के लिए वहां पढ़ने का जुगाड़ कैसे बैठाए? जब अम्मी से बात छेड़ती, अम्मी तीखी आवाज़ में यही कहती—

"तेरी बड़ी बहन पढ़ी है क्या जो तू पढ़ेगी? मैं खुद कहां पढ़ी-लिखी हूं। हम औरतों को घर का काम-काज सीखना चाहिए यही हमारी तालीम है। घर का काम किया कर। मैं नहीं भेजूंगी तुम्हें केंद्र पर।"

उन दिनों की याद ताजा होते ही जानू की बड़ी-बड़ी आंखों में आज भी उदासी के साये मंडराने लगते हैं। किंतु जल्दी ही जज़बात पर काबू पाकर वह थोड़ी तार्किक होकर बोलने लगती है—

"हमारे घर में कोई भी तो पढ़ा-लिखा नहीं। अनवर भाई जो मेटाडोर चलाते हैं, अनपढ़ हैं। अब्बू असम में पान की दुकान करते हैं, वे भी पढ़ने से महरूम रहे। अम्मी तो ठेठ अनपढ़ है। अभी भाभी आई है, उनको भी किसी ने मदरसे नहीं भेजा।"

हिम्मत बटोरी

जानू जानती थी कि अम्मी को इस बात के

लिए मनाना कि वह अपनी बेटी को रोज़ केंद्र पर पढ़ने भेज दे, बहुत मुश्किल था किन्तु उसकी पढ़ने की तमन्ना को दबाना तो और भी मुश्किल था। इसलिए इन स्थितियों से सीधी टक्कर लेने को हिम्मत बटोर ली थी जानू ने। और एक दिन वह केंद्र पर पहुंच गई, और लौटकर घर में ऐलान कर दिया कि वह अब हर रोज पढ़ने जाएगी। अब उसे कोई नहीं रोक सकता। ग्यारह वर्षीय लड़की की ज़िद के सामने मां को घुटने टेकने पड़े। जानू नियमित रूप से केंद्र पर जाने लगी। पढ़ने में उसकी रुचि और सीखने की उसकी चाह को देखकर नीलोफर और फरूख ने उस पर विशेष ध्यान दिया। जानू बेगम ने दो वर्ष बाद पांचवीं और फिर एक वर्ष बाद छठी की परीक्षा स्कूल की लड़कियों के साथ बैठकर दी और बहुत अच्छे अंकों से पास हुई।

छठी की परीक्षा के दौरान जानू खुर्शीद के संपर्क में आई, जो उन दिनों अपर प्राइमरी के केंद्रों को देखती थीं। खुर्शीद ने उसे आगे पढ़ने की खूब प्रेरणा दी और कई बार उसकी अम्मी को भी समझाया कि वह अपनी बेटी की आगे पढ़ने की तमन्ना को न कुचले।

"अम्मी खुर्शीद के सामने तो चुप हो जाती थी किन्तु उसके जाने के बाद मुझ पर गालियों की जो बौछार होती थी बस—" इतना कहकर जानू हंस देती है और बाकी शब्द हंसी में ही समेट कर छिपा लेती है।

जानू आगे बताती है—"छठी के बाद उसी अपर प्रइमरी केंद्र में कुछ लड़कियों को आठवीं की परीक्षा देने के लिए तैयार किया जा रहा था। मैंने एक वर्ष में आठवीं का कोर्स पढ़कर परीक्षा देने का इरादा कर लिया था। किन्तु अम्मी का कहना था कि मैं अब बड़ी हो गई हूं, मुझे घर में ही रहना चाहिए, नहीं तो बिरादरी के लोग बातें बनाएंगे। बिरादरी को इन बातों का जवाब देने की कुव्वत उसमें नहीं है।

"इस तरह मेरी मां का विरोध और मेरी पढ़ाई आपस में टकराते रहे। किंतु खुर्शीद बाजी का सहारा पाकर मेरी पढ़ाई चलती रही और मैंने आठवीं की परीक्षा भी पास कर ली। एक दिन खुर्शीद बाजी से मैंने कहा कि यदि मुझे भी इस प्रकार का एक अनौपचारिक केंद्र चलाने की इज़ाजत मिल जाए तो मैं अपनी बस्ती की लड़कियों और लड़कों को खूब अच्छा पढ़ाने का वादा करती हूं। हालांकि मैं जानती थी कि यह इतना आसान नहीं होगा कि मुझे केंद्र चलाने के लिए अनुदेशिका बना दिया जाए किंतु खुर्शीद बाजी की कोशिशों से यहां भी कामयाबी मिली। मैं पिछले दो सालों से यह अनौपचारिक केंद्र अच्छी तरह से चला रही हूं, जिसका मुझे फ़ख्र है।"

स्कूल में दाखिला

इस तरह जानू को पढ़ने का जो शौक लग गया था, वह रोके नहीं रुका और जानू ने ठान ली कि वह अब दसवीं कक्षा की परीक्षा देगी। पर इसके लिए उसे स्कूल में प्रवेश लेना होगा। यह बहुत बड़ी बाधा थी। वह जानती थी कि इसके लिए अम्मी को राज़ी करना बहुत कठिन होगा, किंतु जानू तो चट्टान भी तोड़ने का इरादा रखती थी। इसलिए उसने खुर्शीद बाजी की सहायता लेकर स्कूल में दाखिला लिया। जानू इसका बखान कुछ भावुक होकर करती है—

"इसके लिए मैंने अम्मी को बहुत मनाया, उस पर गुस्सा भी किया, खाना-पीना भी छोड़ा तब कहीं जाकर अम्मी का विरोध थोड़ा मंद पड़ा।"

किंतु यह कहते-कहते जानू को लगता है जैसे इतने बड़े विरोध को मंद करने का यही कारण इतना वज़नदार नहीं है। इसलिए थोड़ा रुक कर वह फिर अपनी मुस्कान बिखेरती हुई एक और कारण को पुरजोर शब्दों में कहती है—

"मैंने पढ़ाई के साथ-साथ घर का काम करना नहीं छोड़ा। बल्कि घर को पहले से साफ सुंदर बनाया। बिखरा घर संवारा। खाने-पीने में किताबों में पढ़ी बातें जब मैं बोलती और वैसा खाना पकाती तो मां की आंखों में एक अजब सी चमक देखती। शायद, मां भी पढ़ाई के बारे में कुछ अच्छा-अच्छा-सा सोचने लगी थी। मैंने अपनी बड़ी बहन को भी पढ़ाना शुरू कर दिया था। मैंने अपने भाइयों जलाल, बिलाल का भी स्कूल में दाखिला करवाया।"

27 मार्च, 1992 को राजस्थान विश्वविद्यालय का एक दल जानू का अनौपचारिक केंद्र देखने आया। जिस लड़की ने अपने पढ़ने के लिए इतना संघर्ष किया और जो ऐसे ही किसी अनौपचारिक केंद्र पर पढ़कर तैयार हुई हो, वह लड़की कमर कस कर दूसरों को पढ़ाने के लिए ललकार रही है। उसे 100 रु० ईनाम में मिले। जानू बेगम कहती है—

"यह 100 रुपये मेरे बहुत काम आए। हमारी बिजली कट गई थी। अस्थायी कनैक्शन मिला हुआ था—पर हम पैसे नहीं दे पाए थे। अस्सी रुपए देकर फिर से कनैक्शन ले लिया। उस दिन मैंने अम्मी को बहुत ही खुश देखा। वह मेरी बड़ी बहन से मुखातिब होकर कहने लगीं—तुम भी मेरे विरोध के बावजूद और पढ़ लेतीं तो कितना अच्छा होता।"

जानू के चेहरे पर विजय की झलक साफ दिखाई देती है। वह अपना आत्मविश्वास शब्दों में इस तरह ढालती है—

"अम्मी की बातें सुनकर अब मुझे ऐसा लगता है कि उसे यकीन हो गया है कि पढ़ाई इंसान में तबदीली लाती है। मैं भला मौका कहां चूकने वाली हूं। मैंने अपनी अम्मी को भी पढ़ाना शुरू कर दिया है।"

□